सिर का सालन
मूल तेलुगू कहानी
मोहम्मद खदीरबाबू
चित्रांकन
गुलाम मोहम्मद शेख
एकलव्य

सिर का सालन

मूल तेलुगू कहानी

मोहम्मद खदीरबाबू

चित्रांकन

गुलाम मोहम्मद शेख

अँग्रेज़ी से अनुवाद

सुशील जोशी

शृंखला सम्पादक

सुशील शुक्ल

एकलव्य

मेरे अब्बा बगैर मांस के खाना नहीं खा सकते।

अम्मी चाहे हफ्ते में छह दिन और छह रात मांस पकाए मगर सिर्फ एक खाने में तरकारी बना दे, तो वे मुँह बनाएँगे, भात को थाली में इधर-उधर सरकाएँगे, थाली अम्मी की ओर धकेल देंगे और खाने को छूने तक से इन्कार कर देंगे।

कारण यह है कि मेरे अब्बा का जन्म ओंगोल ज़िले के एक तटवर्ती गाँव में हुआ था। मेरे दादा समुद्र के रास्ते मछलियाँ मद्रास भेजा करते थे। बचपन से ही अब्बा को रोज़ाना भरपेट मछली, झींगे, मांस और अण्डे मिलते थे, और वे ताकतवर और तन्दुरुस्त हो गए और मांस खाने के आदी हो गए।

मगर तमाम किस्म के मांस में उन्हें जो चीज़ सबसे ज़्यादा पसन्द है वह है भेड़े के सिर का सालन।
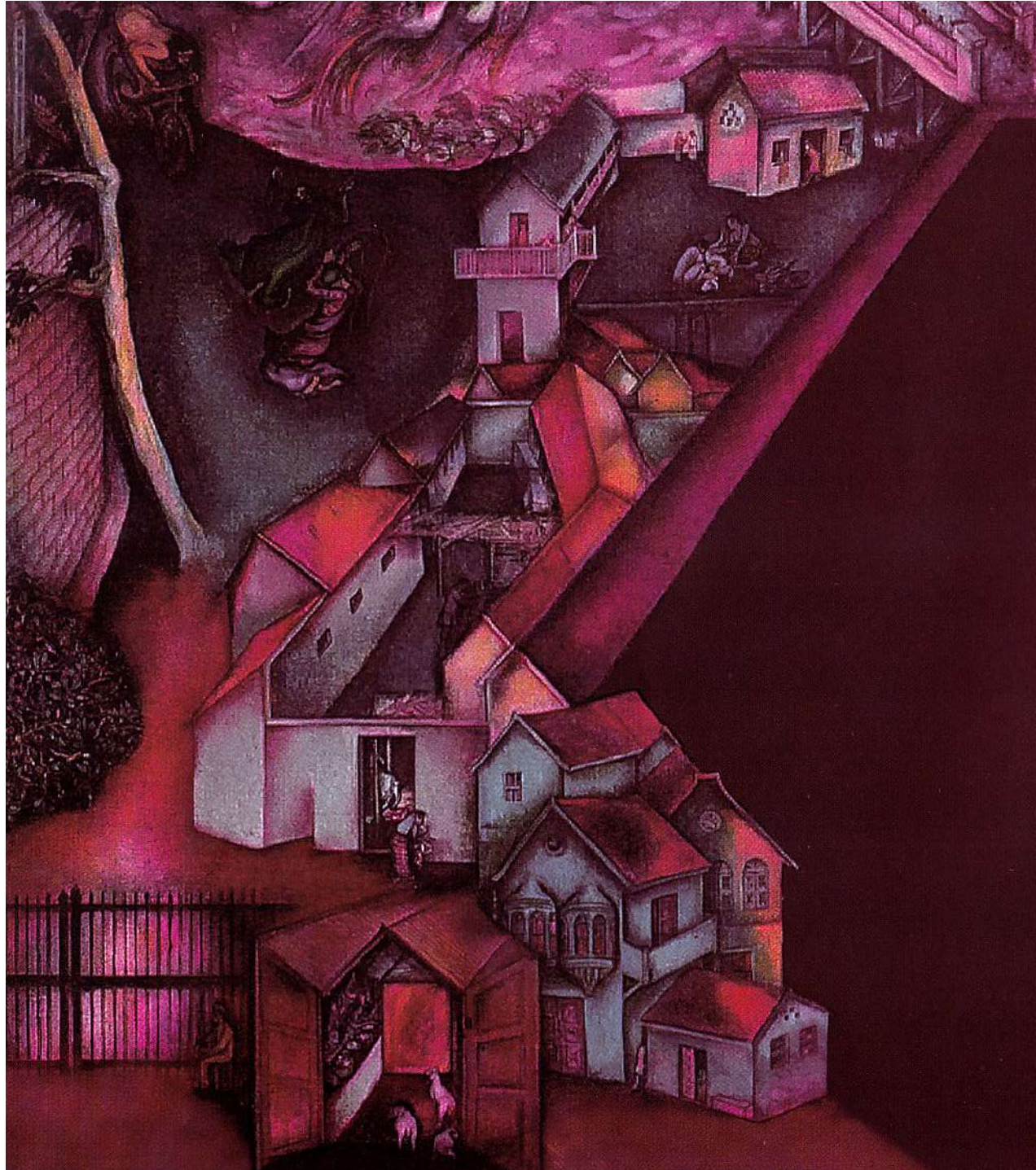
सच कहूँ तो भेड़े के शरीर का हर अंग निहायत स्वादिष्ट होता है: रानों का अपना स्वाद होता है; यदि पसलियों को इमली की पत्तियों के साथ पकाया जाए तो उनका स्वाद कुछ और ही होता है; दिल को यदि अलाव पर भूना जाए तो एक स्वाद होता है, और उसी को यदि मीठे सालन में पकाया जाए तो अलग ही स्वाद होता है; कलेजे का स्वाद अलग होता है; फेफड़ों का और भी अलग। और यदि आँतों को *गोंगूरा* के साथ पकाएँ, तो अद्भुत लगता है। मगर इन सबसे ऊपर है सिर का सालन।

जब भेड़े को काटा जाता है तो उसका मांस तीस लोगों में बँट सकता है। किन्तु सिर पर तो एक ही व्यक्ति दावा कर सकता है। इसीलिए जब भी मेरे अब्बा को सिर का सालन खाने की इच्छा होती तो उनकी यह इच्छा मेरे लिए सिरदर्द बन जाती।

कारण यह है कि...मेरे कस्बे में माब्बाशा नाम का एक आदमी है। वैसे तो वह सुनार है किन्तु वह इतना नहीं कमा पाता है कि गुज़ारा हो सके (बेचारा, उसकी केवल लड़कियाँ ही लड़कियाँ हैं)। तो थोड़ा अतिरिक्त पैसा कमाने के लिए वह हर इतवार को भेड़ा काटकर उसका मांस बेचता है।

वह सब कुछ आपकी नज़रों के सामने करता है – भेड़ा लाता है, उसे काटता है, उसकी खाल निकालता है, उसके मांस के टुकड़े करता है। इसलिए लोग खुले मांस बाज़ार की बजाय उससे खरीदना पसन्द करते हैं। और वैसे भी इतवार के दिन मांस बाज़ार में गहमा-गहमी होती है, इसलिए यह समझ ही नहीं आता कि मांस विक्रेता भेड़ का मांस बेच रहे हैं या भेड़े का।
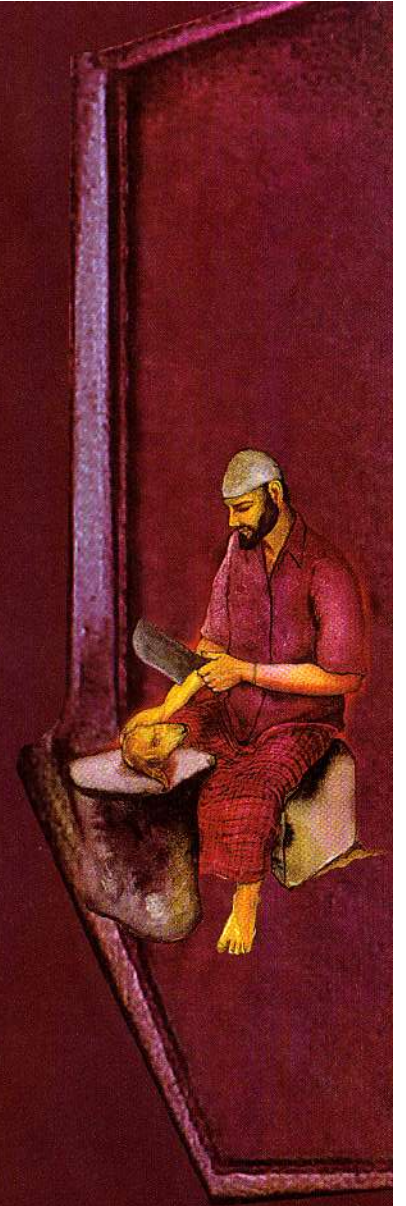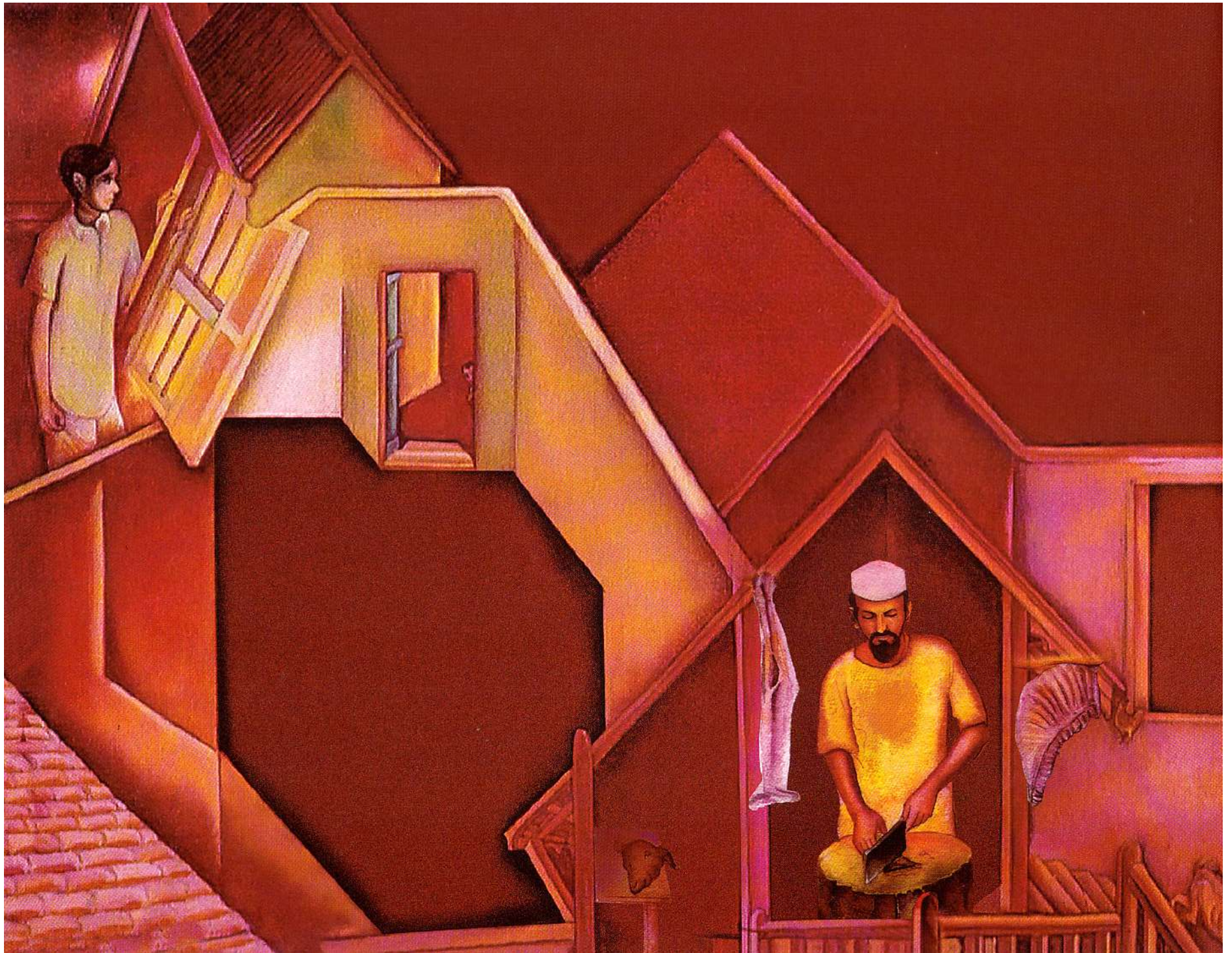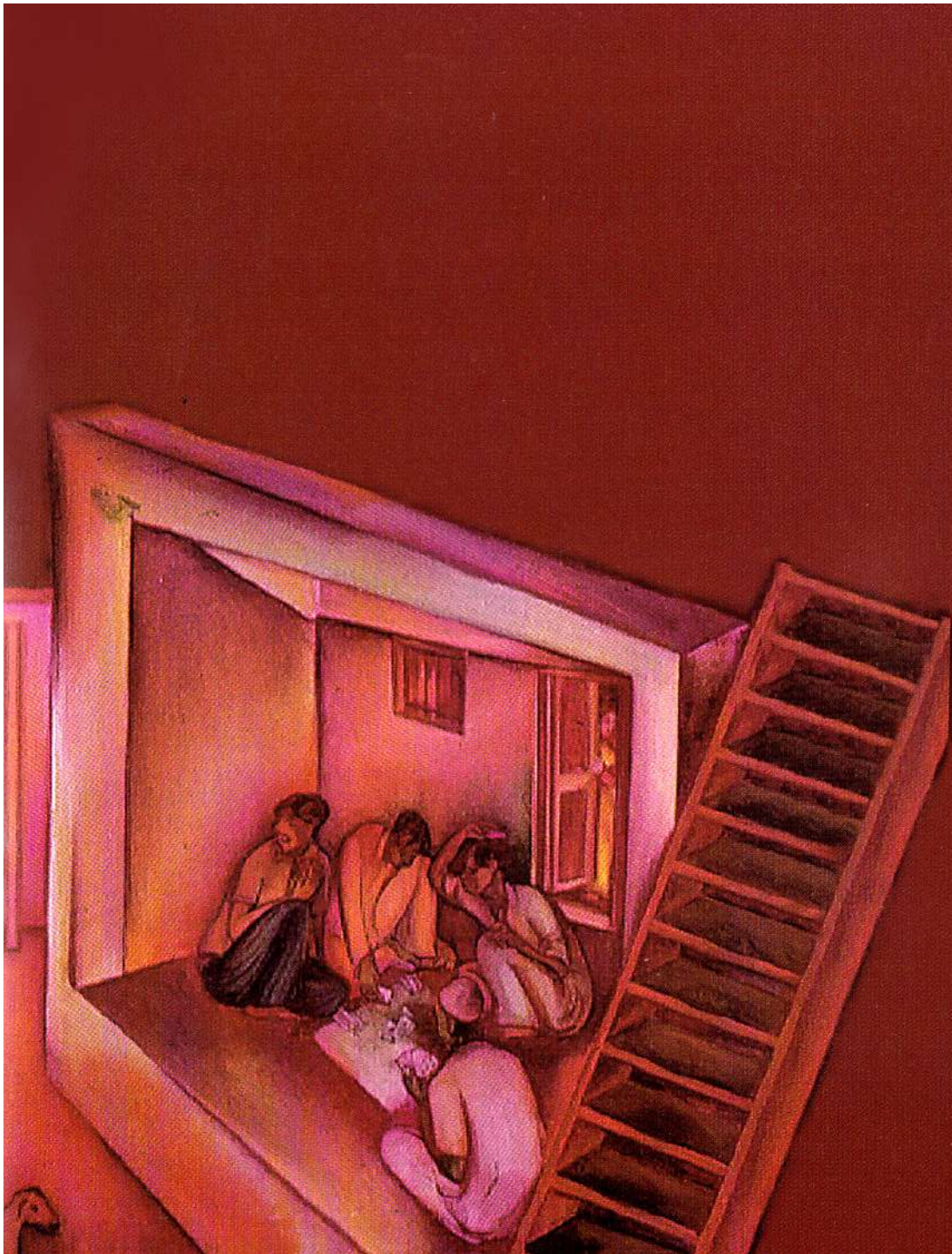
मेरे अब्बा जानते हैं कि माब्बाशा के भेड़े की बहुत माँग रहती है। वे मुझे फिल्म देखने के लिए पैसे की रिश्वत देकर शनिवार शाम को ही माब्बाशा के घर पर सिर की बुकिंग करवाने भेज देते हैं।

मैं खुशी-खुशी सरपट माब्बाशा के घर पहुँचता हूँ। पतली टीन की चादर से बने उनके अगले दरवाज़े पर झुककर उनसे कहता हूँ, "सुनो माब्बाशा...कल मेरे अब्बा को सिर चाहिए। वे चाहते थे कि मैं आपको बता दूँ।" अपनी लाल रेशमी लुंगी को पेट तक उठाते हुए माब्बाशा जवाब देता है, "वह तो ठीक है। मगर ध्यान रखना, भेड़े का सिर उधारी में नहीं मिलता। अपने अब्बा से कह देना कि नक्द भुगतान करना पड़ेगा।"

चूँकि माब्बाशा गाँव के सब लोगों को जानता है, इसलिए सबको मांस उधार दे देता है। किन्तु सिर की माँग बहुत ज़्यादा होती है, इसलिए उसका नक्द पैसा माँगता है। आखिरकार दिन ढलते-ढलते गुल्लक में थोड़े कड़क नोट हों, तो अच्छा लगता है ना?

माब्बाशा की हाँ सुनकर मैं घर की ओर दौड़ लगाता हूँ, ताकि अब्बा को यह बात बताकर उनकी खुशी में भागीदार बन सकूँ। मगर मेरी अम्मी बीच में टपककर उनकी खुशी पर ठण्डा पानी फेर देती हैं। हालाँकि अम्मी बाकी सारी बातों में अब्बा से सहमत होती हैं किन्तु सिर के सालन के मामले में वे उनकी एक नहीं सुनना चाहतीं।

वे कहती हैं, "सिर ही क्यों...पैसे की बरबादी है और कितनी मेहनत लगती है। यदि तुम आँत लेकर आओ तो उसका बढ़िया मीठा सालन बनाकर मज़ा आ जाए।" उन्हें आँतों का सालन ज़्यादा पसन्द है।

अब्बा अम्मी की साड़ी का पल्लू पकड़कर मान मनौवल करने लगते हैं।

"ऐसा मत कहो, प्लीज़। मेरी खातिर, यदि तुम अपने ढंग से सिर का सालन बनाओगी, तो मैं भरपेट खा सकता हूँ मेरी जान।"

अब्बा की काफी मान मनौवल के बाद अम्मा मान जाती हैं।

मैं इतवार को सुबह जल्दी उठकर माब्बाशा के घर जाता हूँ, पैसे उसके मुँह पर फेंकता हूँ, सिर और टाँगें लेकर तार की टोकरी में रखकर घर पहुँच जाता हूँ। ताज़ा कटे मांस के टुकड़ों से टपकता पानी सड़क पर एक डिज़ाइन बनाता चलता है।

सिर्फ कुछ कहने के लिए अम्मी कहेंगी, "पूरा बड़ा भेड़ा लगता है।"

अम्मी की बात को काटने के लिए अब्बा कहेंगे, "बिलकुल नहीं, इस भेड़े को तो अभी सींग भी नहीं निकले हैं।"

"खैर, मेरा क्या जाता है," अम्मी मुझसे कहेंगी, "कदीरा, उठो और पहले इसे धुआँ करवा लाओ।"

तब, टोकरी को सिर पर उठाकर मुझे वेंकटेश्वर थिएटर के पास लोहा भट्टे के मज़दूरों के पास जाना पड़ेगा। तब तक वहाँ मेरे जैसे कई बच्चे आ चुके होंगे जो सिर को धुआँ करवाने ही आए होंगे। हर भट्टे पर दो-दो तो होंगे।
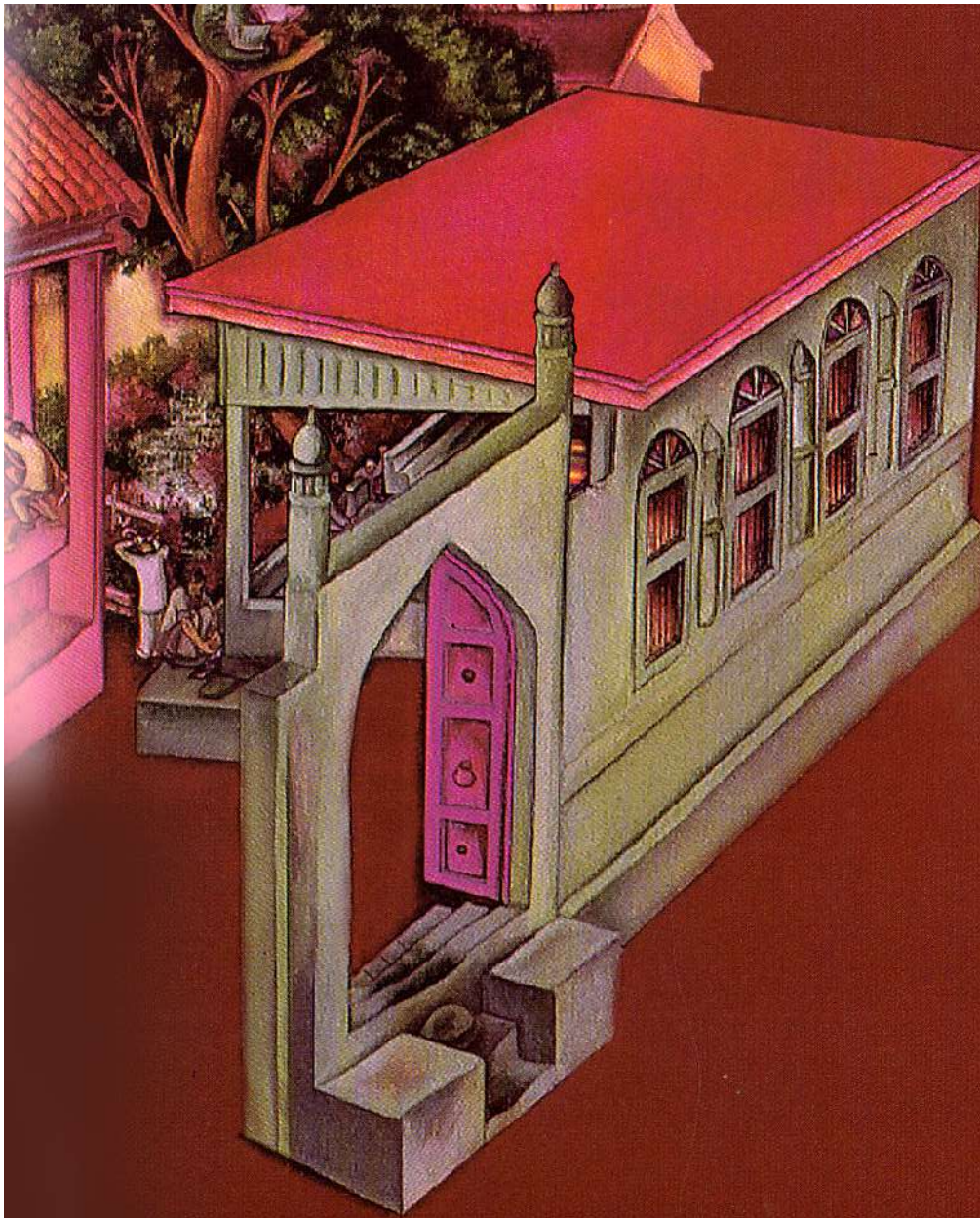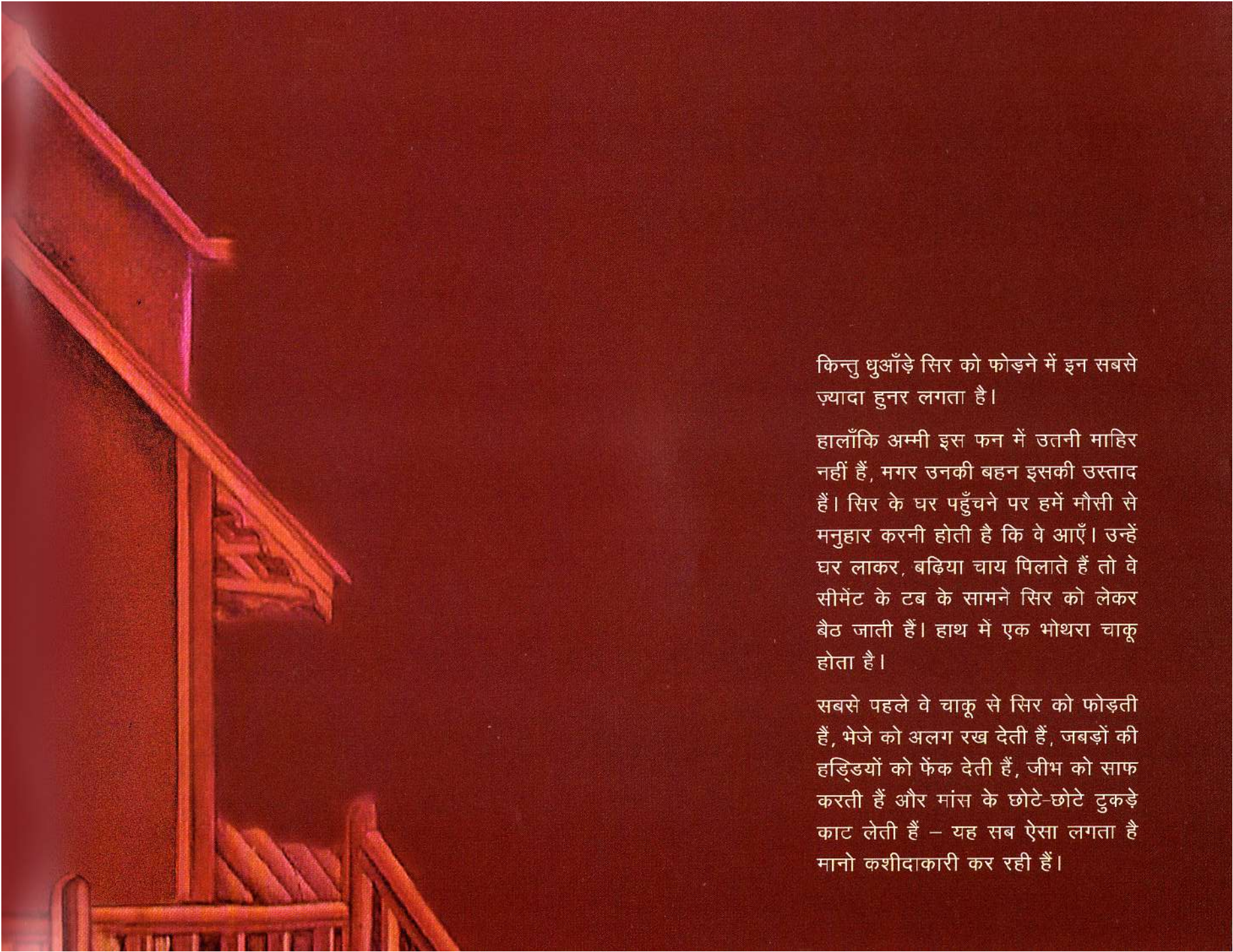
जिस भट्टे पर मैं सिर को धुआँ करवाने जाता हूँ वहाँ दम्पति जिस ढंग से काम करते हैं उसे देखना अद्भुत होता है। पति गरम कोयलों के सामने बैठकर सिर को लोहे की एक छड़ में पिरोकर कोयलों के ऊपर घुमाता रहता है। पत्नी धमन के सामने बैठ धमन को चलाती रहती है और कोयले उठा-उठाकर पति को थमाती जाती है।

जब भेड़े के सिर के नए-नए बाल कोयले की आग से चटकने लगते हैं, तो भट्टे का पूरा कमरा प्यारी-सी गन्ध से भर जाता है। जब सिर अच्छी तरह धुआँड़ा हो जाता है, तो वह उसकी नाक और कानों को लोहे की लाल गरम छड़ से दागता है ताकि कोई कीड़े वगैरह न बचे रह जाएँ। इस बीच पत्नी खुरों को एक हथौड़े से ठोंकती है, नाखून हटाती है और खुरों की सारी दरारों को सफाई से दाग देती है। यह सारा काम करवाने के दो रुपए लगते हैं।
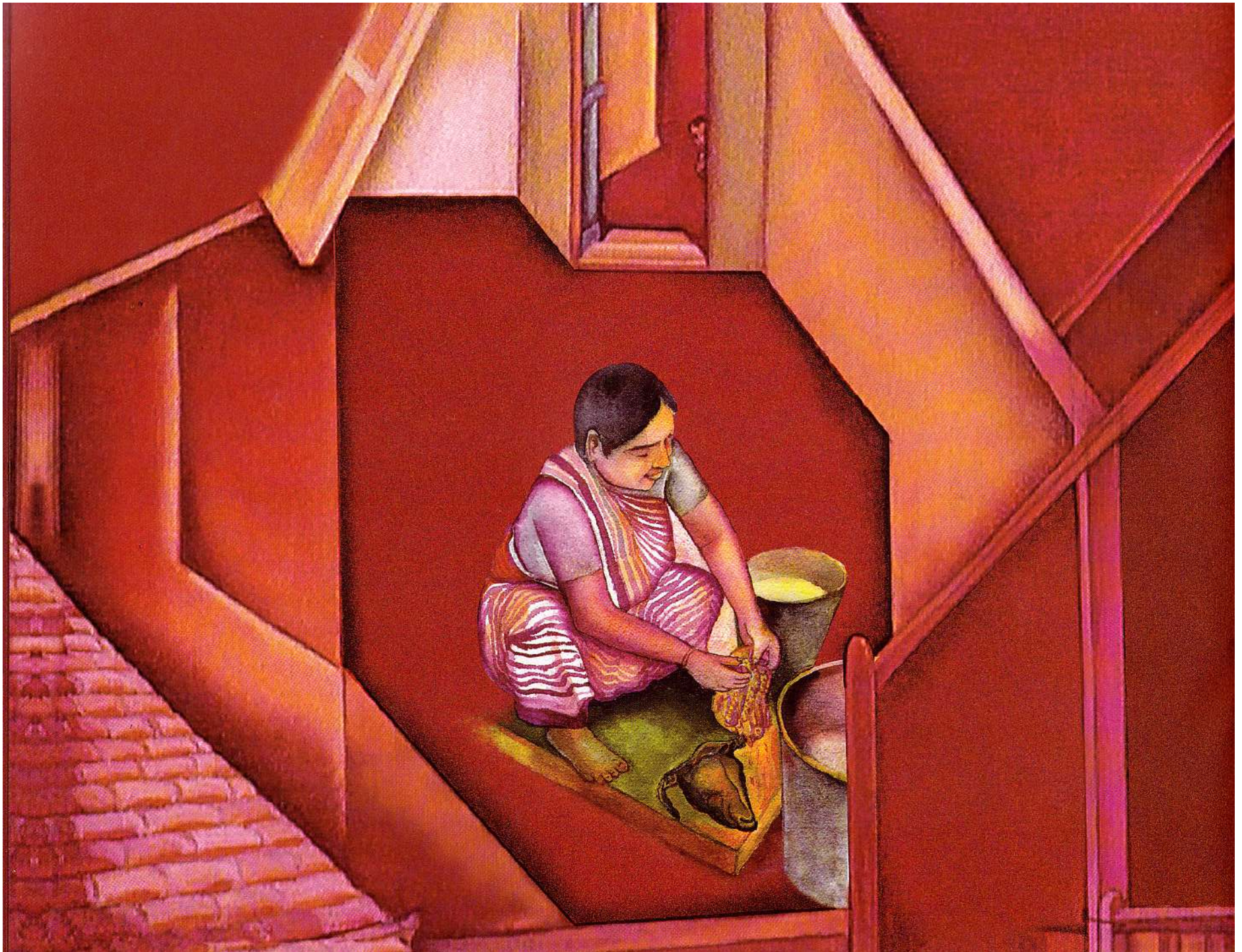
किन्तु धुआँड़े सिर को फोड़ने में इन सबसे ज़्यादा हुनर लगता है।

हालाँकि अम्मी इस फन में उतनी माहिर नहीं हैं, मगर उनकी बहन इसकी उस्ताद हैं। सिर के घर पहुँचने पर हमें मौसी से मनुहार करनी होती है कि वे आएँ। उन्हें घर लाकर, बढ़िया चाय पिलाते हैं तो वे सीमेंट के टब के सामने सिर को लेकर बैठ जाती हैं। हाथ में एक भोथरा चाकू होता है।

सबसे पहले वे चाकू से सिर को फोड़ती हैं, भेजे को अलग रख देती हैं, जबड़ों की हड्डियों को फेंक देती हैं, जीभ को साफ करती हैं और मांस के छोटे-छोटे टुकड़े काट लेती हैं – यह सब ऐसा लगता है मानो कशीदाकारी कर रही हैं।

सब कुछ हो जाने के बाद मांस के छोटे-बड़े टुकड़ों को एक बड़ी पतीली में रख दिया जाता है।

सौजन्यवश अम्मी मेरी मौसी से कहेंगी, "थोड़ी देर रुक क्यों नहीं जाती? थोड़ा सालन घर ले जाना।"

मौसी जानती हैं कि मेरी अम्मी कहें कुछ भी, किन्तु एक चम्मच सालन भी हाथ से जाने नहीं देंगी।

वे कहती हैं, "मुझे अब जाना पड़ेगा। यदि तुम सचमुच सालन भेजना चाहती हो, तो लड़के के हाथ भेज देना।"

"ठीक है बहन," अम्मी जवाब देती हैं, और इन शब्दों को उसी पल याददाश्त में से पोंछ देती हैं।
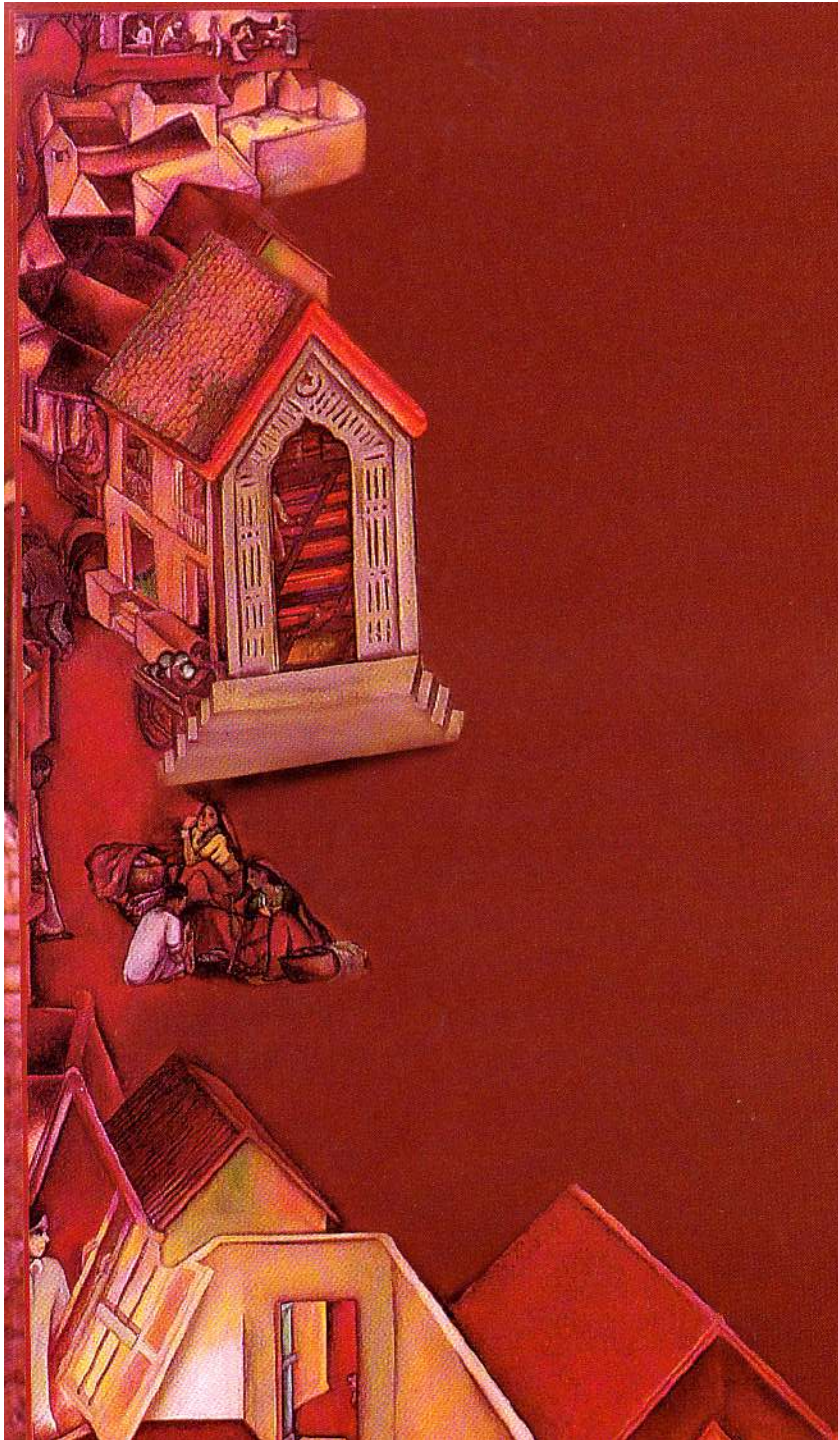
बहन के जाने के बाद अम्मी पतीली को चूल्हे पर रखती हैं।

सालन ताज़ा नारियल, टमाटर, दालचीनी, अदरक-लहसुन के मसाले में पकने लगता है...तो रसोईघर में से अद्‌भुत खुशबू फैलने लगती है।

गन्ध को अपने अन्दर खींचते हुए अब्बा खुशी से डा डा डा गुनगुनाते कमरे में चहलकदमी करने लगते हैं।

रसोई में अम्मी पतीली को चूल्हे पर से हटाती हैं, देख लेती हैं कि सालन ठीक से पक गया है और नमक एकदम सही डला है; साथ ही वे कड़ाही को चूल्हे पर चढ़ा देती हैं। थोड़े से तेल और मसाले में वे भेजे को तलती हैं, जब तक कि वह कत्थई न हो जाए और तीन मिनट के अन्दर उसे उतार लेती हैं।

अब हमारे पास एक तरफ सिर का सालन है और दूसरी तरफ तला हुआ भेजा। जब दोनों तैयार हो जाते हैं, तो एक मिनट का भी इन्तज़ार न करके अम्मी चटाई बिछाकर परोसने को तैयार हो जाती हैं।
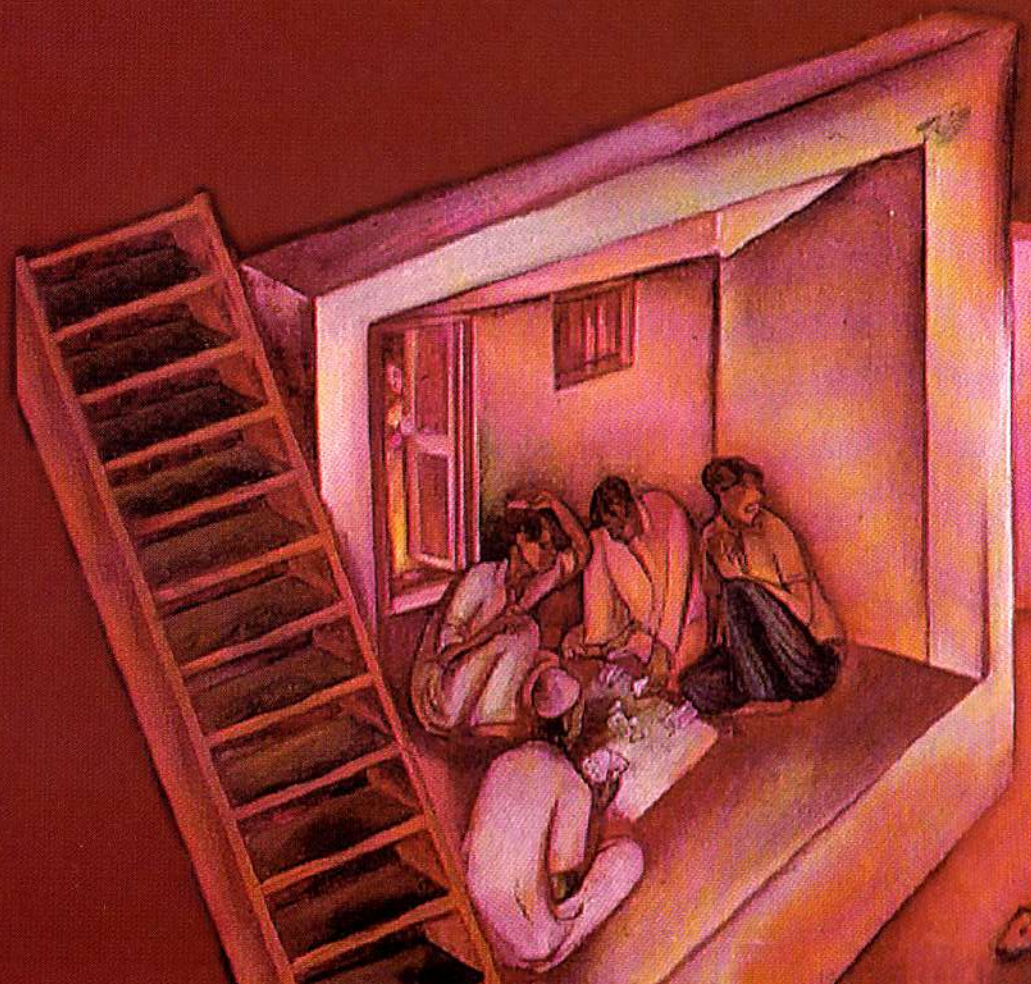
अब्बा तेज़ी से अन्दर आते हैं और अपनी थाली लेकर बैठ जाते हैं; डा डा डा गुनगुनाना चलता रहता है। "मैंने सुबह नाश्ता नहीं खाया था, भूख से मरी जा रही हूँ," कहते हुए अम्मी बैठ जाती हैं। दादी दहलीज़ पर बैठते हुए कहती हैं, "मुझे दो-चार मुट्ठी दे दो।" मैं, मेरा बड़ा भाई, मेरी बहन, छोटा भाई...उनके पीछे-पीछे कतार में लग जाते हैं।

गोल घेरे में बैठकर, भात और तले हुए भेजे में मिलाकर सिर का सालन खाते हुए जिसमें इतनी चर्बी है कि हाथों में चिपकता है – छोटे-छोटे काले टुकड़ों का लज़ीज़ ज़ायका – सुबह का सिरदर्द गायब हो जाता है और महसूस होता है **जैसे यह दुनिया स्वर्ग है।**

गुलाम मोहम्मद शेख शुक्रिया अदा करते हैं सुखदेव राठौड़ और बी वी सुरेश का डिजिटलीकरण में सहायता के लिए और फोटोग्राफी के लिए जलदीप चौहान का।

सिर का सालन/SIR KA SAALAN

मूल तेलुगू कहानीः मोहम्मद खदीरबाबू
चित्रांकनः गुलाम मोहम्मद शेख
डिज़ाइनः चिनन
अँग्रेज़ी से अनुवादः सुशील जोशी
शृंखला सम्पादकः सुशील शुक्ल

Anveshi
डिफरेंट टेल्सः स्टोरीज़ फ्रॉम मार्जिनल कल्चर्स एंड रीजनल लैंग्वेज, हैदराबाद के अन्वेषी रिसर्च सेंटर फॉर विमेन्स स्टडीज़ की एक पहल।
पराग इनीशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के सहयोग से विकसित।
अँग्रेज़ी तथा मलयालम में डी सी बुक्स, कोट्टायम, केरल द्वारा और तेलुगू में हैदराबाद के अन्वेषी रिसर्च सेंटर फॉर विमेन्स स्टडीज़ द्वारा प्रकाशित।

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
संस्करणः अक्तूबर 2017/ 3000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रणः दिसम्बर 2021/ 2000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मैट आर्ट और 210 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-85236-37-2
मूल्यः ₹ 70.00

प्रकाशकः एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, जाटखेड़ी,
भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोनः +91 755 - 297 7770, 71, 72, 73
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट, भोपाल, फोनः +91 755 268 7589

किताबों की सूची

सिर का सालन
अनकही स्कूली कहानियाँ
दो नामों वाला लड़का और अन्य कहानियाँ
फिर जीत गई लाटकी और दिलेर बड़य्या
फटेहाल आदमी
अम्माँ

“सिर का सालन खदीर के परिवार में इतवार के दिन भोजन पकाने की ऐसी कहानी है कि मुँह में पानी आ जाए।”

मूल्य: ₹ 70.00

एकलव्य

डिफरेंट टेल्स क्षेत्रीय भाषा की कहानियाँ ढूँढ-ढूँढकर निकालता है, ऐसी कहानियाँ जो ज़िन्दगी की बातें करती हैं - ऐसे समुदायों के बच्चों की कहानियाँ जिनके बारे में बच्चों की किताबों में बहुत कम पढने को मिलता है। कई सारी कहानियाँ लेखकों के अपने बचपन का बयान करते हुए बड़े होने के अलग-अलग ढंगों को प्रस्तुत करती हैं, प्रायः एक प्रतिकूल दुनिया में जहाँ वे हमजोलियों, पालकों और अन्य वयस्कों से नए सम्बन्ध बनाते हैं। ज़ायकेदार व्यंजनों, छोटे-छोटे जुगाड़ू खेलों, स्कूल के अनापेक्षित सबकों और दिलदार दोस्तियों के माध्यम से ये कहानियाँ हमें एक दिलकश सफर पर ले जाती हैं।